स्वयं सहायता समूह से जुड़कर जगमग हुई दुनिया

पटना (एसएनबी)। मिथिलेश देवी पति के अत्याचार की कहानी भुल गई हैं। उनके सामने है उम्मीदों का खुला संसार। यहां यातना की कहानी दम तोड़ चुकी है। हौसलों ने नया जीवन दिया। मेहनत से संवरी जिंदगानी। तीन बेटियों और एक बेटे की मां मिथिलेश की जुबानी इतनी खूबसूरत बन गई है कि गांव की कई महिलाएं आगे निकल कर मिथिलेश की तरह सुंदर संसार की रचना कर रही हैं।

बात है दरभंगा जिले के उधरा गांव की। महिला विकास निगम द्वारा संचालित स्वयंसिद्धा परियोजना महिलाओं के लिए वरदान बन कर आया। परियोजना के तहत इस गांव में समूह बने और स्वयं बाबा समूह की कोषाध्यक्ष बनीं मिथिलेश। पति के अत्याचार और आर्थिक तंगी से निजात तो मिली ही, उन्होंने स्वयं सहायता समूह के 25 समूहों का खाता खुलवाने में भी सफलता हासिल की। गांव की अन्य महिलाओं ने मिथिलेश का साथ दिया और उसके पति को यह हिदायत भी दी कि उसने पत्नी पर हाथ

उठाया तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी। मिथिलेश गांव की 'दीदी' बन गई। बहादुरपुर प्रखंड के मैना समूह की सदस्य रीता देवी ने कुछ कर गुजरने की की जिद ठानी।

कामयाबी

महिलाओं को समूह से जोड़ा। कितनों की बदली तकदीर। स्वरोजगार के माध्यम से समाज में उन्होंने अपनी नई पहचान बनाने के क्रम में बहादुरपुर चौक पर एक लेडिज टेलर के नाम से सिलाई-कटाई की दुकान खोली। कपड़े सिलने के साथ कुछ महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण भी देती हैं। आत्मनिर्भर बनने के लिए उन्होंने समूह से कर्ज लिया और इस तरह पूरे हुए सपने।

उधर, दुर्गा महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने गांव के दर-ओ-दीवारों पर अपनी खुशहाल जिंदगी की इबारत लिख डाली। आर्थिक रूप से पूरी तरह पति पर निर्भर रहने वाली महिलाएं स्वयं के मेहनत से सशक्तीकरण की मिसाल बन गईं। इनमें से एक आशा देवी 8वीं पास हैं। उन्होंने समूह की कुछ महिलाओं के लिए इंदिरा आवास उपलब्ध कराने के लिए प्रखंड में आवेदन जमा किया। काफी दिन बीत गये लेकिन कमीशन की चाहत में काम नहीं हुआ। तब आशा देवी ने समूह की महिलाओं के साथ मिलकर प्रखंड विकास पदाधिकारी बहादुरपुर के खिलाफ न्यायालय में मुकदमा दायर कर दिया। बाद में आशा देवी तारालाही पंचायत की पंच निर्वाचित हुईं।

महिलाओं ने बनाए 40 हजार एसएचजी

पटना (एसएनबी)। राज्य की साढ़े चार लाख महिलाओं ने चालीस हजार स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया है। इन समूहों ने 15.19 करोड़ रुपये से अधिक की बचत की है। इस पूंजी से महिलाओं की जिंदगी को नई दिशा मिली। समूह न सिर्फ आर्थिक बल्कि कानूनी स्तर पर भी महिलाओं की मदद कर रहे हैं। महिला विकास निगम द्वारा संचालित स्वयंसिद्धा परियोजना के तहत हजारों महिलाएं समूह में काम कर रही हैं। महिला विकास निगम की परियाजेना निदेशक इरीना सिन्हा ने बताया कि समस्तीपुर, वैशाली, गया, रोहतास, औरंगाबाद, नवादा, दरभंगा, सीवान, कैमूर, खगड़िया, पूर्णिया, नालंदा, मधुबनी, सुपौल, बेगूसराय और भोजपुर के कई प्रखंडों में महिलाओं को आत्मनिर्भर होने का मौका मिल रहा है।